...के शुभ अवसर पर आपने मुझ पर जो कृपा की, ...ने सफल हाथ अपनी सारी जिन्दगी में मैंने ...वरना विजयादशमी का वह दिन शायद ...चीथड़भरे स्थान में बीमार अवस्था में ही ...किन्तु उसी दिन से हम लोगों के लिए दिन प्रति दिन ...दिन लौट आने लगे हैं.

...के करतब से मैंने साठ सत्तर लाख रुपयों का ...किन्तु उसी समय भीतरी घुन लगा. मेरा घरबार, ...हो गए और मैं पूरी तरह से गहरे गर्त्त में जा

...और बाप भीख मांगने नहीं देता, ऐसी अवस्था ...हो रही थी, ऊपर से लातें और मुक्कों की मार ...रोने की भी मनाही थी. इसी अवस्था में फिल्मी ...निहारते रहने के बाद शायद परमात्मा ने ही मुझे ...सुनाने की प्रेरणा दी.वरना 'फालके-परिवार' ...होता. मुझे पता है, आप इस तरह की भाषा ...करते. किन्तु मैंने जो कुछ कहा, मेरी अंतरतम से ...इन्हें रोकने का कोई उपाय नहीं है.

...और कुछ समय तक जीवित रखा, तो मुझे पूरी ...आपके चरणों में मेरा फिर भाग्योदय अवश्य होगा. ...माने, तो एक अनुरोध और करूं? मेरे हाथ आ सके ...आगामी विजयादशमी को मुझे केवल पांच रुपए ...अपने पूजाघर में आने वाले वर्ष की शुभ धरोहर के ...पूजना चाहता हूं.

...

भवदीय
(डी. जी. फालके)

आपने थैली-निधि की कल्पना चला कर हमारे लिए ... हजार रुपए इकट्ठा कर भेजे, उसके कारण हम एक बहुत बड़े संकट से मुक्त हो गए. इस उपकार को मैं और मेरे बच्चे हमेशा याद करेंगे. हमारे घरवालों का स्वभाव कुछ क्रोधी और कुछ अजीब-सा है. फलस्वरूप आप जैसे भले लोगों को भी कभी-कभी कष्ट पहुंचता है, मैं भलीभांति जानती हूं. आपको स्वयं इस तरह कोई कष्ट पहुंचा हो, तो मेरे बाल बच्चों की ओर देख कर कृपया उसे भुला दें और हम पर इसी तरह की कृपादृष्टि बनाए रखें.

दि. २७ मई १९३९.

सौ. सरस्वतीबाई फालके.

फालकेजी के इस पत्र का मैंने उत्तर दिया....

श्रीमान् दादासाहब,
सप्रेम नमस्कार,

आपकी चिट्ठी मिली. अंतरतम से व्यक्त आपकी भावनाओं को मैं अपने लिए आप जैसे तपस्वी की शुभाशीष मानता हूं.

आपकी हार्दिक भावनाओं से मैं भी गदगद हो गया हूं. बहुत सन्तोष अनुभव कर रहा हूं. यह सच है कि मुझे अपने बारे में ऐसा लिखा जाना कतई भाता नहीं. किन्तु आपकी भावनाओं की गहराई देख कर प्रांजलता से स्वीकार करता हूं कि ऐसे सार्थक शब्दों की आवश्यकता आदमी को जिन्दगी में अवश्य महसूस होती है. आपके शब्दों ने मुझे वह सन्तोष प्रदान किया है, जो लाखों रुपए खर्च करने पर भी नहीं मिल पाता.

इस समय मैं बहुत जल्दी में हूं. नया चित्रपट सम्पन्न करने की दौड़धूप कर रहा हूं. अभी-अभी आज का काम समाप्त कर थका-मांदा ऊपर आया और मेज पर रखा आपका पत्र खोल कर पढ़ा. बहुत अच्छा लगा.

किन्तु, आपको विजयादशमी के दिन मिले ऐसा प्रबंध कर आपको पांच रुपए भेजने, और उन्हें पूजाघर में रख कर पूजने की जो बात आपने लिखी है, मुझे कुछ अजीबोगरीब लगी. आपको पांच रुपए भेजूं, या न भेजूं यह दुविधा भी मन में जाग गई. किन्तु आपकी भावनाओं का आदर करने के लिए मैंने तय किया है कि आपको वे पांच रुपये (और साथ ही कुछ और रकम भी) भेजूंगा. फिर भी आपसे प्रार्थना है कि आप उसे पूजाघर में रखकर पूजा का सम्मान न दें. हां, आपने अपने पत्र में मेरे प्रति जो भावनाएं व्यक्त की हैं, मैं उन्हें प्राप्त आशीर्वाद के रूप में अपने पूजाघर में अवश्य रख रहा हूं.

(व्ही. शांताराम)

बलवंत भट्ट लल्लूभाई
शांति दवे शंकर राव निर्मला इनामदार साथी
– – खुर्शीद मजहर सेक्रेटरी
जी आर सेठी शांति कुमा यास्मिन नाजिमा शरीफ डाकू
– – जय ज खुर्शीद स्नेह लग्न
हीरेन बोस – कुमार सितारा स्टेट एक्सप्रे
हेम चंदर आर सी वो

...of censorship proved only momentary. As Congress ...increasingly clear their determination to boycott the ...British censorship tried to maintain a blackout of the ...producers now took to the casual introduction of ...bols into films. On a wall, in the background, one ...Gandhian motif, the spinning wheel, signifying def... ...nomic pattern of empire. In a store there would be ...Gandhi's portrait; in a home, a photograph of Nehru ...track, the effect of a passing parade, with a few bars ...Congress song. Often such symbols had no plot refer... ...theatres they elicited cheers. As war began, British cen... ...the scissoring of such shots.

सोहराब मोदी चं वचन
आर भजनवे
सी लुहार अनुपम घट नादिरा जॉन काव वसंत बंगाल
एस बदामी शंकरराव व कांता कुमारी अ वसंती
विजय भट्ट – रोमिला चंद्रकांत वीर बाला
किकूभाई देसा कोरेगांवकर ...यादेवी देवलाल वीर केसरी
पी अलतेकर शफेकर हिंदलेकर विजय डंक